कुमार जीवन - 53

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमार बुद्धि सालिम है। **अधरकुमार बनने से बुद्धि बंट जाती है।** कुमारों को एक ही काम है, अपनी ही जीवन है। उन्हों को तो कितनी ज़िम्मेवारियाँ हो जाती हैं। आप ज़िम्मेवारियों से स्वतन्त्र हो। जो स्वतन्त्र होगा वह आगे बढ़ेगा। **बोझ वाला धीरे-धीरे चलेगा। स्वतन्त्र हल्का होगा वह तेज़ चलेगा।** तो तेज़ रफ़्तार वाले हो। एकरस हो? सदा तीव्र अर्थात् एकरस। ऐसे भी नहीं 6 मास बीत जाएँ। **जैसे हैं वैसे ही चल रहे हैं इसको भी तीव्रगति नहीं कहेंगे। तीव्रगति वाले आज जो हैं कल उससे आगे, परसों उससे आगे। इसको कहा जाता है - "तीव्रगति वाले"।**

➳ _ ➳ तो सदा अपने को शक्तिशाली कुमार समझो। ब्रह्माकुमार बन गये सिर्फ़ इस खुशी में रहे, शक्तिशाली नहीं बने तो विजयी नहीं बन सकते। ब्रह्माकुमार बनना बहुत अच्छा लेकिन शक्तिशाली ब्रह्माकुमार सदा समीप होते हैं। **अब के समीप वाले राज्य में भी समीप होंगे।** अभी की स्थिति में समीपता नहीं तो राज्य में भी समीपता नहीं। अभी की प्राप्ति सदा की प्रालब्ध बना देती है। इसलिए सदा शक्तिशाली।

➳ _ ➳ ऐसे शक्तिशाली ही विश्व-कल्याणकारी बन सकते हैं। कुमारों में शक्ति तो है ही। चाहे शारीरिक शक्ति चाहे आत्मा की। लेकिन विश्व-कल्याण के प्रति शक्ति है या श्रेष्ठ विश्व को विनाशकारी बनाने के कार्य में लगने की शक्ति है? तो कल्याणकारी कुमार हो ना! अकल्याण करने वाले नहीं। **संकल्प में भी सदा सर्व के प्रति कल्याण की भावना हो। स्वप्न में भी कल्याण की भावना हो, इसको कहा जाता है - श्रेष्ठ शक्तिशाली।**

➳ _ ➳ कुमार शक्ति द्वारा जो सोचें वह कर सकते हैं। जो वही संकल्प और कर्म, दोनों साथ-साथ हों। **ऐसे नहीं संकल्प आज किया कर्म पीछे। संकल्प और कर्म एक हो और साथ-साथ हो। ऐसी शक्ति हो।** ऐसी शक्ति वाले ही अनेक आत्माओं का कल्याण कर सकते हैं।

➳ _ ➳ तो सदा सेवा में सफ़ल बनने वाले हो या कभी खिट-खिट करने वाले हो? **मन में, कर्म में, आपस में सबमें ठीक। किसी में भी खिट-खिट न हो।** सदा अपने को विश्व-कल्याणकारी कुमार समझो तो जो भी कर्म करेंगे उसमें कल्याण की भावना समाई होगी। **(30-01-1985)**

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ संगमयुग पर हार खाने से

→ संगमयुग में धर्मराज की मार खानी पड़ेगी

→ सतयुग में देवताओं के लिए हार बनाने पड़ेंगे

→ द्वापर युग से भक्त बनकर देवताओं के गले में हार पहनाने पड़ेंगे

➳ _ ➳ मैं विश्व कल्याणकारी हूँ

→ यह नारे लगाना बहुत आसान है

- परन्तु इसे धारण करने के लिए बहुत शक्ति चाहिए
  - कदम कदम पर झुकना होता है
  - कदम कदम पर सहना होता है
  - **मर मर झुक झुक सीख सीख**

➳ _ ➳ पवित्रता अर्थात

→ केवल अविवाहित रहना नहीं

→ केवल ब्रह्मचर्य धारण करना नहीं

→ ब्रह्मचर्य धारण कर लिया

- लेकिन आत्माओं के प्रति मन में negativity ही negativity भरी हुई है
  - तो क्या वो पवित्रता है ?

→ पवित्रता एक शक्ति बन जाए

- उसके लिए गहन साधना की आवश्यकता है

→ संकल्प / स्वप्न में भी किसी के प्रति आँख न डूबे - यही सच्ची पवित्रता है

➳ _ ➳ कलयुगी विवाह

→ यह एक ऐसी **सड़ी गली संस्था** है

- जिसमें दो दुखी व्यक्ति मिलते हैं
  - एक दुसरे को सुख देने के लिए

→ जो विवाहित हैं

- वो यह सोचते हैं की मुझे अपनी धर्मपत्नी को कैसे खुश करना है ?

→ जो अविवाहित हैं

- वो यह सोचते हैं की मुझे मेरे परमात्मा को कैसे खुश करना है ?